वचन

देहधारी

हुआ

ख्रीष्टविज्ञान पर
लिग्निएर का
कथन

वचन
देहधारी हुआ

ख्रीष्टविज्ञान पर
लिग्निएर का
कथन

लिगोनियर मिनिस्ट्रीज़्

The Word Made Flesh: The Ligonier Statement on Christology
Copyright © 2016 by Ligonier Ministries
Second edition, third printing
Published by Ligonier Ministries
421 Ligonier Court, Sanford, FL 32771
Ligonier.org | ChristologyStatement.com
ISBN: 9781567698145

वचन देहधारी हुआ : ख्रीष्टविज्ञान पर लिग्निएर का कथन का हिन्दी अनुवाद, "फॉर द ट्रूथ" द्वारा "लिग्निएर मिनिस्ट्रीज़" के लिए किया गया है।
प्रथम हिन्दी प्रकाशन 2021।Headline R
सभी बाइबल उद्धरण IBP बाइबल से लिए गए हैं।

प्रस्तावना

यीशु ख्रीष्ट कौन है? यीशु के बारे में लगभग हर वयस्क व्यक्ति ने कुछ विचार बनाया है। ये विचार संभवतः सतही, या अनभिज्ञ, या पूरी तरह से विधर्मी हो सकते हैं। यीशु के बारे में सत्य, न केवल विचार मात्र, महत्व रखता है . . . और यह अनन्त काल के लिए महत्व रखता है ।

जो *मसीही* कहलाते हैं वे ख्रीष्ट के शिष्य के रूप में उसका अनुसरण करने को अंगीकार करते हैं। वे ऐसे ख्रीष्टविज्ञान को मानते हैं—ख्रीष्ट के सिद्धान्त को—जो ख्रीष्ट के विषय में उनके विचार को प्रतिबिम्बित करता है। इस ख्रीष्टविज्ञान को अप्रत्यक्ष रीति से या प्रत्यक्ष रीति से व्यक्त किया जा सकता है। यह सम्भवतः बाइबल के प्रकाशन की गहराई और पवित्रशास्त्र पर ऐतिहासिक मसीही चिन्तन को दर्शा सकता है, या यह नवीन और परमेश्वर के वचन से असंबद्ध हो सकता है। लेकिन किसी भी विश्वास करने वाले मसीही के पास ख्रीष्टविज्ञान का अभाव नहीं है ।

क्योंकि ख्रीष्ट का अनुसरण करना मसीही धर्म के लिए केंद्रीय है, इसलिए कलीसिया ने हमारी कल्पनाओं के ख्रीष्ट का नहीं, बल्कि शताब्दियों से इतिहास और पवित्रशास्त्र के ख्रीष्ट का प्रचार करने के लिए परिश्रम किया है। ऐतिहासिक विश्वास के कथन जैसे कि नीकिया का विश्वास वचन, कैल्सिडॉन की परिभाषा, हाएडलबर्ग धर्मप्रश्नोत्तरी, और वेस्टमिन्स्टर विश्वास की अभिव्यक्ति में, मसीही लोगों ने ख्रीष्ट पर बाइबल की शिक्षा को व्यक्त किया है।

आजकल, इन कथनों को प्रायः उपेक्षित और गलत समझा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य के विषय में व्यापक भ्रम उत्पन्न होता है। ख्रीष्ट की महिमा और उसके लोगों की आत्मिक उन्नति के लिए, ख्रीष्टविज्ञान पर लिग्निएर का कथन मसीही कलीसिया की ऐतिहासिक, शास्त्रसम्मत, बाइबलीय ख्रीष्टविज्ञान को एक ऐसे रूप में रखना चाहता है जो अंगीकार करने के लिए सरल, कलीसिया के चिरस्थाई विश्वास को सिखाने के लिए उपयोगी, और एक ऐसे सार्वजनिक विश्वास के रूप में सेवा करने के लिए सक्षम हो जिसके आसपास विभिन्न कलीसियाओं से विश्वासी एक साथ मिशन के लिए कार्य कर सकते हैं। यह कथन कलीसिया के ऐतिहासिक विश्वास वचनों और अंगीकार के स्थान पर नहीं है, किन्तु एक अनुपूरक है, जो इस विषय पर इन सभों की समस्त शिक्षा को व्यक्त करता है कि ख्रीष्ट कौन है और उसने क्या किया है। इसको ख्रीष्ट अपने राज्य के लिए उपयोग करे।

परमेश्वर के देहधारी पुत्र, हमारे नबी, महायाजक, और राजा के नाम में।

आर.सी. स्प्रोल

वसन्त 2016

हम उस रहस्य और चमत्कार को अंगीकार करते हैं
कि परमेश्वर देहधारी हुआ
और यीशु ख्रीष्ट हमारे प्रभु के द्वारा
अपने महान उद्धार में आनन्दित होते हैं।

पिता और पवित्र आत्मा के साथ,
पुत्र ने सब वस्तुओं की सृष्टि की,
सब वस्तुओं को सम्भालता है,
और सब वस्तुओं को नया बनाता है।
वास्तव में परमेश्वर,
वह वास्तव में मनुष्य बना,
एक व्यक्ति में दो स्वभाव।

वह कुंवारी मरियम से जन्मा,
और हमारे मध्य में रहा।
क्रूस पर चढ़ाया गया, मरा, और गाड़ा गया,
वह तीसरे दिन जी उठा,
स्वर्ग में चढ़ गया,
और महिमा और न्याय में
वह पुनः आएगा

हमारे लिए,
उसने व्यवस्था का पालन किया,
पापों के लिए प्रायश्चित्त किया,
और परमेश्वर के प्रकोप को सन्तुष्ट किया।

उसने हमारे मैले चिथड़ों को लिया
और अपना धार्मिकता का वस्त्र
हमें प्रदान किया।

वह हमारा नबी, महायाजक, और राजा है,
जो अपनी कलीसिया का निर्माण कर रहा है,
जो हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है,
और सब वस्तुओं पर राज्य कर रहा है।

यीशु ख्रीष्ट प्रभु है;
हम उसके पवित्र नाम की सर्वदा स्तुति करते हैं।

आमीन।

स्वीकृतियाँ एवं अस्वीकृतियाँ

पवित्रशास्त्र के

प्रमाणों

के साथ

अनुच्छेद 1

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु, परमेश्वर के सनातन पुत्र के इतिहास में देहधारण है, जो पवित्र त्रिएकता का द्वितीय व्यक्ति है। वह ख्रीष्ट है, परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किया गया मसीहा।

[1]हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट मात्र एक मनुष्य है या आरम्भिक मसीही कलीसिया की एक काल्पनिक रचना था।

अनुच्छेद 2

हम स्वीकार करते हैं कि परमेश्वरत्व की एकता में सनातन से एकलौता पुत्र, पिता और पवित्र आत्मा के साथ एकतत्त्व (*होमोऊसिओस*), समतुल्य, और सहशाश्वत है।[2]

हम अस्वीकार करते हैं कि पुत्र मात्र परमेश्वर के जैसा है (*होमोईऊसिओस*) या यह कि वह पिता द्वारा अपने पुत्र के रूप में केवल गोद लिया गया था। हम सत्ताशास्त्रीय त्रिएकता में पिता के प्रति पुत्र की सनातन अधीनता को अस्वीकार करते हैं।

अनुच्छेद 3

हम स्वीकार करते हैं नीकिया और कैल्सिडॉन के विश्वास वचनों के साथ, कि यीशु ख्रीष्ट वास्तव में परमेश्वर और वास्तव में मनुष्य दोनों है, दो स्वभाव एक व्यक्ति में सदा के लिए जुड़े हुए हैं।[3] हम अस्वीकार करते हैं कि पुत्र की सृष्टि की गई थी। हम अस्वीकार करते हैं कि कभी ऐसा भी समय था जब पुत्र परमेश्वर नहीं था।

हम अस्वीकार करते हैं, कि इतिहास में पुत्र के देहधारण से पूर्व, यीशु ख्रीष्ट का मानव शरीर और प्राण अस्तित्व में था।

---

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था....और वचन, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:1,14)। और देखे भजन संहिता 110:1; मत्ती 3:17; 8:29; 16:16; मरकुस 1:1,11; 15:39; लूका 22:70; यूहन्ना 4:25-26; प्ररितों के काम 5:42; 9:22; गलातियों 4:4; फिलिप्पियों 2:6; कुलुस्सियों 2:9; इब्रानियों 5:7; 1 यूहन्ना 5:20.

2 इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:19)। और देखे यूहन्ना 1:18; 3:16-18; 10:30; 20:28; 2 कुरिन्थियों 13:14; इफिसियों 2:18.

3 क्योंकि उसमें परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। और देखे लूका 1:35; यूहन्ना 10:30; रोमियों 9:5; 1 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 3:18.

अनुच्छेद 4

हम स्वीकार करते हैं द्विस्वभाविक संयुक्ति को, कि यीशु ख्रीष्ट के दो स्वभाव बिना मिश्रण, भ्रम, विभाजन, या अलगाव के उसके एक व्यक्ति में जुड़े हैं।[4]

हम अस्वीकार करते हैं कि दो स्वभावों के मध्य भेद करना उनमें अलगाव करना है।

अनुच्छेद 5

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट के देहधारण में, उसके परमेश्वर और मानव स्वभावों ने अपने गुणों को बनाए रखा है। हम स्वीकार करते हैं कि दोनों स्वभावों के गुण एक ही व्यक्ति यीशु ख्रीष्ट में पाए जाते हैं।[5]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट के मानव स्वभाव में परमेश्वरीय गुण हैं या वह परमेश्वरीय स्वभाव को समा सकता है। हम अस्वीकार करते हैं कि परमेश्वरीय स्वभाव परमेश्वरीय गुणों को मानव स्वभाव में संचारित करता है। हम अस्वीकार करते हैं कि पुत्र ने देहधारण में अपने किसी भी परमेश्वरीय गुणों को छोड़ा या त्यागा था।

अनुच्छेद 6

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट परमेश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप है, कि वह सच्ची मानवता का आदर्श है, तथा हम अपने छुटकारे में अन्ततः उसके स्वरूप में बदले जाएंगे।[6]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट वास्तविक मनुष्य से कम था, अर्थात वह केवल मानव प्रतीत हुआ, या उसमें उचित मानवीय प्राण का अभाव था। हम अस्वीकार करते हैं कि द्विस्वभाविक संयुक्ति में पुत्र ने मानव स्वभाव के स्थान पर मानव व्यक्ति को धारण किया।

---

4 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है"। यीशु न उस से कहा, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने इसे तुझ पर प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है" (मत्ती 16:16-17)। और देखे लूका 1:35, 43; यूहन्ना 1:1-3; 8:58; 17:5; प्रेरितों के काम 20:28; रोमियों 1:3; 9:5; 2 कुरिन्थियों 8:9; कुलुस्सियों 2:9; 1 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 3:18; प्रकाशितवाक्य 1:8, 17; 22:13.

5 अपने में वही स्वभाव रखो जो मसीह यीशु में था, जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर के समान होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा। उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का स्वरूप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया (फिलिप्पियों 2:5-7)। और देखे मत्ती 9:10; 16:16; 19:28; यूहन्ना 1:1; 11:27, 35; 20:28; रोमियों 1:3-4; 9:5; इफिसियों 1:20:22; कुलुस्सियों 1:16-17; 2:9-10; 1 तीमुथियुस 3:16; इब्रानियों 1:3, 8-9; 1 पतरस 3:18; 2 पतरस 1:1.

6 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप तथा समस्त सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की अथवा पृथ्वी की, दृश्य अथवा अदृश्य, सिंहासन अथवा साम्राज्य, शासन अथवा अधिकार—समस्त वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं (कुलुस्सियों 1:15-16)। और देखे रोमियों 8:29; 2 कुरिन्थियों 4:4-6; इफिसियों 4:20-24; इब्रानियों 1:3-4.

अनुच्छेद 7

हम स्वीकार करते हैं कि वास्तविक मनुष्य के रूप में, यीशु ख्रीष्ट ने अपनी दीनता की स्थिति में मानव स्वभाव की सभी प्राकृतिक सीमाओं और सामान्य निर्बलताओं को धारण किया। हम स्वीकार करते हैं कि वह प्रत्येक बातों में हमारे समान बनाया गया, फिर भी वह निष्पाप था।[7]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने पाप किया। हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने वास्तव में दुख, परीक्षा, या कठिनाई का अनुभव नहीं किया। हम अस्वीकार करते हैं कि पाप सच्ची मानवता में अन्तर्निहित है अथवा कि यीशु ख्रीष्ट का पाप रहित होना उसके वास्तविक मनुष्य होने के साथ असंगत है।

अनुच्छेद 8

हम स्वीकार करते हैं कि ऐतिहासिक यीशु ख्रीष्ट का, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, अलौकिक रीति से गर्भधारण हुआ, और वह कुंवारी मरियम से जन्मा। हम कैल्सिडॉन के विश्वास वचन के साथ स्वीकार करते हैं कि वह उचित रीति से इस अर्थ में परमेश्वर की माता (*थियोटोकोस*) कहलाती है क्योंकि जिस बालक को उसने जन्म दिया वह परमेश्वर का देहधारी पुत्र, पवित्र त्रिएकता का द्वितीय व्यक्ति है।[8]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने अपने परमेश्वर वाले स्वभाव को मरियम से पाया अथवा उसका पाप रहित होना उससे प्राप्त हुआ।

---

7 इस कारण उसके लिए यह आवश्यक हुआ कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने, जिससे कि वह परमेश्वर से सम्बन्धित बातों में दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक हो सके और लोगों के पापों का प्रायश्चित्त करे। जबकि उसने स्वयं परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है (इब्रानियों 2:17-18)। और देखे मीका 5:2; लूका 2:52; रोमियों 8:3; गलातियों 4:4; फिलिप्पियों 2:5-8; इब्रानियों 4:15.

8 छठे महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत नासरत नामक गलील के नगर में, एक कुंवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक एक पुरुष से हुई थी जो दाऊद के वंश का था, और उस कुंवारी का नाम मरियम था (लूका 1:26-27)। और देखे मत्ती 1:23; 2:11; लूका 1:31, 35, 43; रोमियों 1:3; गलातियों 4:4.

अनुच्छेद 9

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट अन्तिम आदम है जो अपने नियुक्त कार्य की प्रत्येक बात में सफल हुआ जहाँ पहला आदम विफल हुआ, तथा यीशु ख्रीष्ट अपने लोगों का सिर है, जो ख्रीष्ट की देह है।[9]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने एक पतित मानव स्वभाव को धारण किया या मूल पाप को प्राप्त किया।

अनुच्छेद 10

हम स्वीकार करते हैं यीशु ख्रीष्ट की सक्रिय और निष्क्रिय आज्ञाकारिता को, कि उसने अपने सिद्ध जीवन में व्यवस्था की धर्मी मांगों को हमारे बदले पूर्णतः पूरा किया, और यह कि उसने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पाप के दण्ड को सहा ।[10]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट किसी भी बात में परमेश्वर की व्य वस्था का पालन करने या पूरा करने में विफल हुआ। हम अस्वी कार करते हैं, कि उसने नैतिक व्यवस्था को समाप्त किया।

---

9 अत: जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया, तथा पाप के द्वारा मृत्यु आई, उसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया—क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, पर जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप की गणना नहीं होती। तथापि मृत्यु ने आदम से लेकर मूसा तक शासन किया, उन पर भी जिन्होंने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था; आदम उसका प्रतीक था जो आने वाला था, परन्तु वरदान अपराध के समान नहीं है। क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण अनेक मर गए, तब उस से कहीं अधिक परमेश्वर का अनुग्रह, तथा एक मनुष्य के, अर्थात्, यीशु मसीह के, अनुग्रह का दान बहुतों को प्रचुरता से मिला। यह दान उसके समान नहीं जो एक मनुष्य के पाप करने के द्वारा आया, क्योंकि एक ओर तो एक ही अपराध के कारण न्याय आरम्भ हुआ जिसका प्रतिफल दण्ड हुआ; परन्तु दूसरी ओर अनेक अपराधों के कारण ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ जिसका प्रतिफल धार्मिकता हुआ। जब एक ही मनुष्य के अपराध के कारण, मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, इस से बढ़कर वे जो अनुग्रह और धार्मिकता के दान को प्रचुरता से पाते हैं, उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे। अत: जिस प्रकार एक ही अपराध का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा हुआ, उसी प्रकार धार्मिकता के एक ही कार्य का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए धर्मी ठहराया जाना हुआ। जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से अनेक पापी ठहराए गए, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता से अनेक मनुष्य धर्मी ठहराए जाएंगे। व्यवस्था ने प्रवेश किया कि अपराध बढ़ जाए, परन्तु जहां पाप बढ़ा वहां अनुग्रह में और भी कहीं अधिक वृद्धि हुई, कि जैसे पाप ने मृत्यु में राज्य किया वैसे ही अनुग्रह भी धार्मिकता से अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा राज्य करे (रोमियों 5:12-21)। और देखे 1 कुरिन्थियों 15:22, 45-49; इफिसियों 2:14-16; 5:23; कुलुस्सियों 1:18.

10 जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से अनेक पापी ठहराए गए, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता से अनेक मनुष्य धर्मी ठहराए जाएंगे (रोमियों 5:19)। और देखे मत्ती 3:15; यूहन्ना 8:29; 2 कुरिन्थियों 5:21; फिलिप्पियों 2:8; इब्रानियों 5:8.

अनुच्छेद 11

हम स्वीकार करते हैं कि क्रूस पर यीशु ख्रीष्ट ने अपने लोगों के पापों के लिए एक दण्डात्मक प्रतिस्थापनीय प्रायश्चित्त के रूप में अपने आप को अर्पित किया, परमेश्वर के प्रकोप की शान्त करते हुए और परमेश्वर के न्याय को सन्तुष्ट करते हुए, और वह पाप, मृत्यु, और शैतान पर विजयी हुआ।[11]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट की मृत्यु शैतान को चुकाई गई फिरौती थी। हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट की मृत्यु मात्र उदाहरण था, शैतान पर मात्र एक विजय थी, या परमेश्वर के नैतिक शासन का मात्र एक प्रदर्शन था।

अनुच्छेद 12

हम स्वीकार करते हैं दोहरे अभ्यारोपण के सिद्धान्त को, कि विश्वास के द्वारा हमारा पाप यीशु ख्रीष्ट पर अभ्यारोपित किया जाता है और उसकी धार्मिकता हम पर अभ्यारोपित की जाती है।[12]

हम अस्वीकार करते हैं कि बिना न्याय के पाप को अनदेखा किया जाता है। हम अस्वीकार करते हैं, कि यीशु ख्रीष्ट की सक्रिय आज्ञाकारिता हम पर अभ्यारोपित नहीं की जाती है।

अनुच्छेद 13

हम स्वीकार करते हैं कि तीसरे दिन यीशु ख्रीष्ट मृतकों में से जी उठा और कि वह बहुत लोगों द्वारा देह में देखा गया[13]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट मरता हुआ मात्र प्रतीत हुआ, या केवल उसका आत्मा जीवित रहा, या यह कि उसका पुनरुत्थान केवल उसके अनुयायियों के हृदयों में हुआ।

---

11 उसी को परमेश्वर ने उसके लहू में विश्वास के द्वारा प्रायश्चित्त ठहराकर खुल्लमखुल्ला प्रदर्शित किया। यह उसकी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए हुआ, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता में, पहिले किए गए पापों को भुला दिया; यह उसने इसलिए किया कि वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता प्रदर्शित हो, कि वह स्वयं ही धर्मी ठहरे और उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो जो यीशु पर विश्वास करता है (रोमियों 3:25-26)। और देखे यशायाह 53; रोमियों 5:6, 8, 15; 6:10; 7:4; 8:34; 14:9, 15; 1 कुरिन्थियों 15:3; इफिसियों 5:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; 2 तीमुथियुस 2:11; इब्रानियों 2:14,17; 9:14-15; 10:14; 1 पतरस 2:24; 3:18; 1 यूहन्ना 2:2; 3:8; 4:10.

12 जो पाप से अनजान था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:21)। और देखे मत्ती 5:20; रोमियों 3:21-22; 4:11; 5:18; 1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 9:9; इफिसियों 6:14; फिलिप्पियों 1:11; 3:9; इब्रानियों 12:23.

13 मैंने यह बात जो मुझ तक पहुंची थी उसे सब से मुख्य जानकर तुम तक भी पहुंचा दी, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा, और गाड़ा गया, तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, तब वह कैफा को, और फिर बारहों को दिखाई दिया (1 कुरिन्थियों 15:3-5)। और देखे यशायाह 53; मत्ती 16:21; 26:32; 28:1-10; यूहन्ना 21:14; प्रेरितों के काम 1:9-11; 2:25, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30; 10:40; रोमियों 4:24-25; 6:9-10; इफिसियों 4:8-10.

अनुच्छेद 14

हम स्वीकार करते हैं कि अपनी महिमामय स्थिति में यीशु ख्रीष्ट पुनरुत्थान का प्रथम फल है, कि उसने पाप और मृत्यु दोनों पर विजय पाई है, तथा उसके साथ मिलन के कारण हम भी जिलाए जाएंगे।[14]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट की महिमान्वित पुनर्जीवित शरीर उस शरीर से पूर्णतः भिन्न था जो बगीचे की कब्र में रखी गई थी। हम अस्वीकार करते हैं कि हमारा पुनरुत्थान हमारे शरीरों से अलग केवल हमारी आत्माओं का पुनरुत्थान है।

अनुच्छेद 15

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट परमेश्वर पिता के दाहिनी हाथ पर अपने स्वर्गीय सिंहासन पर चढ़ा, कि वह राजा के रूप में वर्तमान में राज्य कर रहा है, और कि वह दृश्यमान रूप से सामर्थ्य और महिमा में लौटेगा।[15]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट अपने लौटने के समय के विषय में गलत था।

अनुच्छेद 16

हम स्वीकार करते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन में यीशु ख्रीष्ट ने अपने आत्मा को उण्डेला, तथा अपने वर्तमान समय में वह सब वस्तुओं पर राज्य कर रहा है, अपने लोगों के लिए मध्यस्थता कर रहा है, और अपनी कलीसिया का निर्माण कर रहा है, जिसका वह एकमात्र सिर है।[16]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने अपने प्रतिनिधि के रूप में रोम के बिशप को नियुक्त किया, अथवा यीशु ख्रीष्ट के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति कलीसिया का सिर हो सकता है।

---

14 पर अब मसीह तो मृतकों में से जिलाया गया है, और जो सोए हुए हैं उनमें वह पहला फल है....“हे मृत्यु, तेरी विजय कहां है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां?” (1 कुरिन्थियों 15:20, 55)। और देखे रोमियों 5:10; 6:4, 8,11; 10:9; 1 कुरिन्थियों 15:23; 2 कुरिन्थियों 1:9; 4:10-11; इफिसियों 2:6; कुलुस्सियों 2:12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; इब्रानियों 2:9,14; 1 यूहन्ना 3:14; प्रकाशितवाक्य 14:4; 20:14.

15 अतः जब वे एकत्रित हुए, तो वे उस से पूछने लगे, “प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य को पुनः स्थापित कर देगा?” उसने उनसे कहा, “उन समयों अथवा कालों का जानना जिन्हें पिता ने निर्धारित किया है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे।” इतना कहने के पश्चात् वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आंखों से ओझल कर दिया। जबकि वह जा रहा था तो वे उसे जाते हुए आकाश की ओर एकटक देख रहे थे, और देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए, और कहने लगे, “गलीली पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, वैसे ही फिर आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है” (प्रेरितों के काम 1:6-11)। और देखे लूका 24:50-53; प्रेरितों के काम 1:22; 2:33-35; इफिसियों 4:8-10; 1 तीमुथियुस 3:16.

16 उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया (इफिसियों 1:22)। और देखे प्रेरितों के काम 2:33; 1 कुरिन्थियों 11:3-5; इफिसियों 4:15; 5:23; कुलुस्सियों 1:18,

अनुच्छेद 17

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट सब लोगों का न्याय करने के लिए फिर महिमा में आएगा और अन्ततः अपने समस्त शत्रुओं को परास्त करेगा, मृत्यु का नाश करेगा, और नये स्वर्ग एवं नई पृथ्वी को प्रारंभ करेगा जिसमें वह धार्मिकता से राज्य करेगा ।[17]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट का अन्तिम आगमन 70 ईस्वी में हुआ था और कि उसका आगमन और उससे सम्बन्धित घटनाओं को प्रतीकात्मक रीति से देखा जाना चाहिए।

अनुच्छेद 18

हम स्वीकार करते हैं कि जो लोग प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम पर विश्वास करते हैं उनका उसके अनन्त राज्य में स्वागत किया जाएगा, किन्तु जो लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं वे नरक में सचेत अनन्त दण्ड भोगेंगे।[18]

हम अस्वीकार करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति बचाया जाएगा। हम अस्वीकार करते हैं कि जो लोग यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास किए बिना मरते हैं वे विलुप्त हो जाएंगे।

अनुच्छेद 19

हम स्वीकार करते हैं कि वे सब लोग जो जगत की उत्पत्ति से पहले यीशु ख्रीष्ट में चुने गए हैं और जो विश्वास के द्वारा उसके साथ जोड़े गए हैं, उसके साथ तथा एक-दूसरे के साथ सहभागिता का आनन्द उठाते हैं। हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट में हम प्रत्येक आत्मिक आशीष का आनन्द उठाते हैं, जिसमें धर्मी ठहराया जाना, लेपालकपन, पवित्रीकरण, और महिमान्वित किया जाना सम्मिलित है।[19]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट और उसके उद्धार के कार्य को अलग-अलग किया जा सकता है। हम अस्वीकार करते हैं कि स्वयं यीशु ख्रीष्ट से अलग होकर हम यीशु ख्रीष्ट के उद्धार के कार्य में भाग लेने के योग्य हो सकते हैं। हम अस्वीकार करते हैं कि बिना उसकी देह, कलीसिया के साथ जुड़े होकर हम यीशु ख्रीष्ट के साथ जुड़ सकते हैं।

---

17 उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करें और दृढ़तापूर्वक साक्षी दें कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्यायी नियुक्त किया है (प्रेरितों के काम 10:42)। और देखे यूहन्ना 12:48; 14:3; प्रेरितों के काम 7:7; 17:31; 2 तीमुथियुस 4:1,8.

18 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा जो उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों तथा कुकर्मियों को एकत्रित करेंगे और उन्हें आग के भट्ठे में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा। तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले (मत्ती 13:41:43)। और देखे यशायाह 25:6-9; 65:17-25; 66:21-23; दानिय्येल 7:13-14; मत्ती 5:29-30; 10:28; 18:8-9; मरकुस 9:42-49; लूका 1:33; 12:5; यूहन्ना 18:36; कुलुस्सियों 1:13-14; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; 2 तीमुथियुस 4:1, 18; इब्रानियों 12:28; 2 पतरस 1:11; 2:4; प्रकाशितवाक्य 20:15.

19 क्योंकि हम सब ने, चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा पिलाया गया (1 कुरिन्थियों 12:13)। और देखे यूहन्ना 14:20; 15:4-6; रोमियों 6:1-11; 8:1-2; 12:3-5; 1 कुरिन्थियों 1:30-31; 6:15-20; 10:16-17; 12:27; 2 कुरिन्थियों 5:17-21; गलातियों 3:25-29; इफिसियों 1:3-10, 22-23; 2:1-6; 3:6; 4:15-16; 5:23, 30; कुलुस्सियों 1:18; 2:18-19.

अनुच्छेद 20

हम स्वीकार करते हैं, केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त पर, कि हमारी व्यक्तिगत योग्यता या कार्यों से अलग, परमेश्वर हमें केवल अपने अनुग्रह के कार्य से, केवल हमारे विश्वास के द्वारा, केवल यीशु ख्रीष्ट के व्यक्ति में और उसके कार्यों के द्वारा धर्मी घोषित करता है। हम स्वीकार करते हैं कि केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त को अस्वीकार करना सुसमाचार को अस्वीकार करना है।[20]

हम अस्वीकार करते हैं कि हमारे भीतर अनुग्रह के किसी अन्तर्वाह के आधार पर हम धर्मी ठहराए जाते हैं। हम अस्वीकार करते हैं कि हम तभी धर्मी ठहराए जाते हैं जब हम अन्तर्निहित रूप से धर्मी बन जाते हैं। हम अस्वीकार करते हैं कि यह धर्मी ठहराया जाना अब या कभी भी हमारी विश्वासयोग्यता पर आधारित होगा।

अनुच्छेद 21

हम स्वीकार करते हैं पवित्रीकरण के सिद्धान्त को, कि परमेश्वर, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से, यीशु ख्रीष्ट के कार्य के आधार पर, हमें पाप के शासन करने वाली सामर्थ्य से छुड़ाता है, हमें अलग करता है, तथा हमें अपने पुत्र के स्वरूप के सदृश और अधिक से अधिक ढालते हुए हमें पवित्र बनाता है। हम स्वीकार करते हैं कि पवित्रीकरण परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है और धर्मी ठहराए जाने के साथ अभिन्न रीति से जुड़ा है, यद्यपि यह धर्मी ठहराए जाने से भिन्न है। हम स्वीकार करते हैं कि इस पवित्रीकरण वाले परमेश्वर के कार्य में हम केवल निष्क्रिय नहीं हैं, परन्तु हम पाप के प्रति मरने और प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता में जीने के लिए हमारे निरन्तर प्रयास में नियुक्त किए गए अनुग्रह के साधनों का स्वयं उपयोग करने के लिए उत्तरदायी हैं।[21]

हम अस्वीकार करते हैं कि पवित्रीकरण में यीशु ख्रीष्ट के साथ मिलन में शीघ्रता से फल लाए बिना कोई व्यक्ति धर्मी ठहराया जाता है। हम अस्वीकार करते हैं कि हमारे भले कार्य, यद्यपि यीशु ख्रीष्ट में परमेश्वर के सामने स्वीकृत हैं, धर्मी ठहराया जाना कमाते हैं। हम अस्वीकार करते हैं कि इस जीवन में अन्तर्वासी पाप के साथ हमारा संघर्ष समाप्त हो जाएगा, भले ही पाप का हमारे ऊपर कोई प्रभुत्व नहीं है।

---

20 इसलिए विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से हमारा मेल अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा है (रोमियों 5:1)। और देखे लूका 18:14; रोमियों 3:24; 4:5; 5:10; 8:30; 10:4,10; 1 कुरिन्थियों 6:11; 2 कुरिन्थियों 5:19, 21; गलातियों 2:16-17; 3:11, 24; 5:4; इफिसियों 1:7; तीतुस 3:5,7.

21 हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता परमेश्वर धन्य हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित किया है। उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पूर्व मसीह में चुन लिया कि हम उसके समक्ष प्रेम में पवित्र और निर्दोष हो (इफिसियों 1:3-4)। और देखे यूहन्ना 17:17; प्रेरितों के काम 20:32; रोमियों 6:5-6, 14; 8:13; 1 कुरिन्थियों 6:11; 2 कुरिन्थियों 7:1; गलातियों 5:24; इफिसियों 3:16-19; 4:23-24; फिलिप्पियों 3:10; कुलुस्सियों 1:10-11; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; इब्रानियों 12:14.

अनुच्छेद 22

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट, परमेश्वर और अपने लोगों के बीच में एक मात्र मध्यस्थ है। हम यीशु ख्रीष्ट के नबी, महायाजक, और राजा के रूप में मध्यस्थता की भूमिका को, दोनों उसकी दीनता की स्थिति और महिमा की स्थिति में स्वीकार करते हैं। हम स्वीकार करते हैं कि इस मध्यस्थतात्मक कार्यभार को कार्यान्वित करने के लिए वह पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषिक्त किया गया जिसके लिए वह पिता द्वारा बुलाया गया था।[22]

हम अस्वीकार करते हैं कि परमेश्वर का कोई अन्य देहधारण हुए थे या कभी होंगे अथवा यीशु ख्रीष्ट को छोड़कर छुटकारे के लिए कोई अन्य मध्यस्थ हैं या होंगे। हम केवल यीशु ख्रीष्ट से अलग किसी भी उद्धार को अस्वीकार करते हैं।

अनुच्छेद 23

हम स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ नबी के रूप में, यीशु ख्रीष्ट भविष्यवाणी का विषय और वस्तु दोनों था। हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने परमेश्वर की इच्छा को प्रकट और उद्घोषित किया, भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की, और अपने आप में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति है।[23]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट ने कभी भी कोई झूठी भविष्यवाणी की या झूठा वचन बोला, या वह अपने विषय में सभी भविष्यवाणियों को पूरा करने में विफल हुआ या विफल होगा।

---

22 क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है, अर्थात् मसीह यीशु, जो मनुष्य है (1 तीमुथियुस 2:5)। और देखे अय्यूब 33:23-28; लूका 1:33; यूहन्ना 1:1-14; 14:6; प्रेरितों के काम 3:22; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:1-4; 5:5-6; 9:15; 12:24.

23 अब हे भाइयो, मैं जानता हूं कि तुमने यह काम अज्ञानतावश किया और वैसा ही तुम्हारे अधिकारियों ने भी किया। परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब नबियों केमुख से पहिले ही बता दिया था, कि उसका मसीह दुख उठाएगा, उसने इस रीति से पूर्ण किया। इसलिए पश्चात्ताप करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिससे कि प्रभु की उपस्थिति से सुख-चैन के दिन आएं, और वह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए मसीह ठहराया गया है, और जिसे स्वर्ग में उस समय तक रहना है जब तक कि समस्त वस्तुएं पूर्वावस्था में न आ जाएं जिनकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों के मुख से की है। मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मेरे समान एक नबी खड़ा करेगा। जो कुछ वह तुमसे कहे उस पर ध्यान देना' (प्रेरितों के काम 3:17-22)। और देखे मत्ती 20:17; 24:3; 26:31, 34, 64; मरकुस 1:14-15; लूका 4:18-19, 21; यूहन्ना 13:36; 21:22; 1 कुरिन्थियों 1:20; इब्रानियों 1:2; प्रकाशितवाक्य 19:10.

अनुच्छेद 24

हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट मलिकिसिदक की रीति पर हमारा श्रेष्ठ महायाजक है, जिसने हमारे बदले अपना सिद्ध बलिदान किया और जो पिता के सम्मुख हमारे लिए मध्यस्थता करता रहता है। हम स्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट प्रायश्चित्त का सर्वश्रेष्ठ बलिदान का विषय और वस्तु दोनों है।[24]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट, लेवी के गोत्र से न होने और यहूदा के गोत्र से होने के कारण, हमारे याजक के रूप में सेवा करने के लिए अयोग्य ठहरता है। हम अस्वीकार करते हैं कि मिस्सा में बलि और याजक के रूप में वह निरन्तर अपने आपको बलिदान के नाई अर्पित करता है, यहाँ तक कि लहू-रहित रीति में भी। हम अस्वीकार करते हैं कि वह केवल स्वर्ग में याजक बना और वह पृथ्वी पर याजक नहीं था।

अनुच्छेद 25

हम स्वीकार करते हैं कि राजा के रूप में, यीशु ख्रीष्ट सब लौकिक और अलौकिक शक्तियों के ऊपर अबऔर सर्वदा के लिए सर्वोच्च रीति से राज्य करता है।[25]

हम अस्वीकार करते हैं कि यीशु ख्रीष्ट का साम्राज्य इस संसार का मात्र एक राजनैतिक साम्राज्य है। हम अस्वीकार करते हैं कि पृथ्वी के शासक उसके प्रति उत्तरदायी नहीं हैं।

---

24 क्योंकि मसीह ने हाथ के बनाए हुए पवित्रस्थान में, जो सच्चे पवित्रस्थान का प्रतिरूप मात्र है, प्रवेश नहीं किया, वरन् स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि अब हमारे लिए परमेश्वर के सामने प्रकट हो। और यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए—जैसे कि महायाजक प्रति वर्ष लहू लेकर पवित्र स्थान में प्रवेश तो करता है, परन्तु अपना लहू लेकर नहीं—अन्यथा जगत की उत्पत्ति के समय से उसे बार बार दुख भोगना पड़ता, परन्तु अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रकट हुआ कि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को मिटा दे। और जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है, वैसे ही मसीह भी, बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक बार बलिदान होकर, दूसरी बार प्रकट होगा। पाप उठाने के लिए नहीं, परन्तु उनके उद्धार के लिए जो उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करते हैं (इब्रानियों 9:24-28)। और देखे यूहन्ना 1:36; 19:28-30; प्रेरितों के काम 8:32; 1 कुरिन्थियों 5:7; इब्रानियों 2:17-18; 4:14-16; 7:25; 10:12,26; 1 पतरस 1:19; प्रकाशितवाक्य 5:6, 8, 12-13; 6:1,16; 7:9-10,14, 17; 8:1; 12:11; 13:8; 15:3.

25 जब तक वह अपने सब शत्रुओं को पैरों तले न कर ले, उसका राज्य करना अनिवार्य है (1 कुरिन्थियों 15:25)। और देखे भजन संहिता 110; मत्ती 28:18-20; लूका 1:32; 2:11; प्रेरितों के काम 2;25, 29, 34; 4:25; 13:22, 34,36;15:16; रोमियों 1:3; 2 तीमुथियुस 2:8; इब्रानियों 4:7; प्रकाशितवाक्य 3:7; 5:5; 22:16.

अनुच्छेद 26

हम स्वीकार करते हैं कि जब यीशु ख्रीष्ट अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेगा, तो वह अपने राज्य को पिता को सौंप देगा। हम स्वीकार करते हैं कि नए आकाश और नई पृथ्वी में, परमेश्वर अपने लोगों के साथ होगा, और कि विश्वासी यीशु ख्रीष्ट को आमने-सामने देखेंगे, उसके जैसे बना दिए जाएंगे, और सर्वदा के लिए उसका आनन्द उठाएंगे।[26]

हम अस्वीकार करते हैं कि मानव जाति के लिए केवल यीशु ख्रीष्ट के अतिरिक्त कोई अन्य आशा है या कोई नाम या मार्ग है जिसके द्वारा उद्धार प्राप्त किया जा सकता है।

---

26 इसके पश्चात् अन्त होगा। उस समय वह समस्त शासन, अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। जब तक वह अपने सब शत्रुओं को पैरों तले न कर ले, उसका राज्य करना अनिवार्य है। सब से अन्तिम शत्रु जिसका अन्त किया जाएगा वह मृत्यु है। क्योंकि "उसने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया है।" परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ अधीन कर दिया गया है तो यह स्पष्ट है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया है वह स्वयं अलग रहा। और जब सब अधीन हो जाएगा तो पुत्र स्वयं ही उसके अधीन हो जाएगा, जिसके सब कुछ उसके अधीन कर दिया, जिससे कि परमेश्वर ही सब में सब कुछ हो। (1 कुरिन्थियों 15:24-28)। और देखे यशायाह 65:17; 66:22; फिलिप्पियों 2:9-11; 2 पतरस 3:13; 1 यूहन्ना 3:2-3; प्रकाह शितवाक्य 21:1-5; 22:1-5.

व्याख्यात्मक लेख

उपयोग

के लिए

सुझावों के साथ

एक दिन सम्पूर्ण पृथ्वी एकमात्र अंगीकार के साथ गूंजेगी कि: "यीशु ख्रीष्ट प्रभु है" (फिलिप्पियों 2:11)। यह छोटा सा वाक्य अर्थ से उमड़ता है। यीशु ख्रीष्ट है कहने का अर्थ यह है कि वह w"अषिक्त जन" है। तथा यह कहना है कि वह प्रतिज्ञा किया हुआ और लम्बे-समय से प्रतीक्षित मसीहा है। यीशु ख्रीष्ट प्रभु है कहने का अर्थ यह है कि वह सत्य परमेश्वर से सत्य परमेश्वर है। देहधारण चमत्कारों का चमत्कार है, एक विस्मयकारी रहस्य। परमेश्वर

देहधारण हुआ। यहाँ तक कि उसको यीशु कहने का भी अर्थ यह कहना है कि वह ही अकेला तथा एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह जगत में अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के उद्देश्य से आया (मत्ती 1:21)।

"यीशु ख्रीष्ट प्रभु है" एक विश्वास वचन है— विश्वास का एक संक्षिप्त कथन। अँग्रेज़ी का शब्द क्रीड लतीनी शब्द क्रेडो से आता है, जिसका अर्थ है "मैं विश्वास करता हूँ।" यह छोटा विश्वास वचन घोषित करता है कि हम ख्रीष्ट के विषय में क्या विश्वास करते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि 1 तीमुथियुस 3:16 भी एक विश्वास वचन हो सकता है। दो कारण इस ओर इशारा करते हैं। पहला, पौलुस इस अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, "निस्सन्देह ।" दूसरा, इस पद के वाक्यांश तालबद्ध और काव्यात्मक रीति से व्यक्त किए गए हैं। ये वाक्यांश देहधारी ख्रीष्ट के विषय में एक संक्षिप्त सारांश को प्रस्तुत करते हैं :

वह जो शरीर में होकर प्रकट हुआ
आत्मा द्वारा धर्मी प्रमाणित हुआ,
स्वर्गदूतों को दिखाई दिया,
गैरयहूदियों में उसका प्रचार हुआ,
जगत में उस पर विश्वास किया गया
और महिमा में ऊपर उठा लिया गया। (1 तीमुथियुस 3:16)

बाइबल का क्रम महत्वपूर्ण है। जब आरम्भिक कलीसिया ने महासभाओं को संगठित किया और विश्वास वचनों को बनाया, तो वे विश्वास को अंगीकार करने के लिए एक नई पद्धति की रचना नहीं कर रहे थे। वे बाइबल द्वारा स्थापित परम्परा को आगे बढ़ा रहे थे।

जैसे-जैसे चुनौतियाँ उठ खड़ी हुईं, आरम्भिक कलीसिया ने ठोस कदम उठाया। साथ ही, अनेक लोग सोचते हैं कि आराधना सम्बन्धित आवश्यकताएं, या शुद्ध आराधना की मनसा, ने भी कलीसिया को विश्वास वचनों के लिखने के कार्य में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया। यह विशेषकर ख्रीष्ट के सिद्धान्त के विषय में सच है। बीती शताब्दियों से ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य का मूल सत्य मसीहियत की निर्णायक विशेषता रही है।

नए नियम के लेखकों ने स्वयं ख्रीष्ट की पहचान और कार्य के विषय में झूठे विचारों से संघर्ष किया। कलीसिया के आरम्भिक शताब्दियों में, विभिन्न समूहों ने ख्रीष्ट की सच्ची मानवता को चुनौती दी। एक समूह, प्रतीयमानवादियों ने दावा किया कि यीशु केवल मनुष्य "प्रतीत" हुआ। अन्य विधर्मताओं, जैसे एरियसवाद ने, ख्रीष्ट के सच्चे परमेश्वरत्व को चुनौती दी। इन विधर्मताओं ने दावा किया कि वह परमेश्वर पिता के तुल्य नहीं था। बाद के समूहों ने यह व्यक्त करने में त्रुटि की कि कैसे दो स्वभाव, ख्रीष्ट का सच्चा मनुष्यत्व और सच्चा परमेश्वरत्व, उसके एक व्यक्ति में संयुक्त हैं। आरम्भिक कलीसिया ने महासभाओं को आयोजित करने तथा विश्वास वचन लिखने के द्वारा इन चुनौतियों का प्रत्युत्तर दिया जो कि मसीही विश्वास के केन्द्रीय सत्यों के विषय में बाइबल की शिक्षा को सारांशित करते थे। ये विश्वास वचन एक मूल्यवान विरासत हैं, जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा गया। इसलिए आज, हमारे पास प्रेरितों का विश्वास वचन, नीकिया का विश्वास वचन, तथा कैल्सिडॉन की परिभाषा का संसाधन है। ये विश्वास वचन सीमा रेखाएं हैं, जो शास्त्रसम्मतता और विधर्मता के बीच स्पष्ट रेखाएं खींचतीं हैं।

इन विश्वास वचनों ने कलीसिया को सदृढ़ करने का कार्य किया है और, परमेश्वर के अनुग्रहकारी और शासनाधिकार वाले हाथ के द्वारा, सुसमाचार का विश्वासयोग्यता से प्रचार करने के लिए मसीहियों का मार्गदर्शन किया है। ये उनके चिरस्थाई महत्व की साक्षी के रूप में आज दोहराए जाते हैं। वे हमें स्मरण दिलाते हैं कि ख्रीष्ट हमारे ईश्वरविज्ञान के केन्द्र में है और हमारी आराधना के केन्द्र में है। ये विश्वास वचन कलीसिया का आह्वान करते हैं कि, "उस विश्वास के लिए यत्नपूर्वक संघर्ष करते रहो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सदा के लिए सौंपा गया था" (यहूदा 1:3)।

फिर भी, ये विश्वास वचन केवल ख्रीष्ट के कार्य की ओर संकेत करते हैं। वे पूर्ण रीति से सुसमाचार को नहीं समझाते हैं। धर्मसुधार के समय दृश्यमान कलीसिया में एक वास्तविक विभाजन हुआ। ख्रीष्ट का कार्य एक मुख्य विषय था। विशेष रूप से, केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त को लेकर वाद-विवाद, वह केन्द्रीय विवाद था जिसने धर्मसुधार को आरम्भ किया। यहाँ कलीसिया प्रोटेस्टेन्टवाद और रोमन कैथोलिकवाद के अनुसार अलग-अलग विभाजित हुई। प्रोटेस्टेन्टवाद मात्र विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त (सोला फिडे) को स्वीकार करता है, जबकि रोमन कैथोलिकवाद, ट्रेंट की महासभा की आज्ञप्तियों का पालन करते हुए, केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त को अस्वीकार करता है, इसके विपरीत वे विश्वास और कार्य के सहयोग से धर्मी ठहराए जाने को समझने का चुनाव करते हैं। धर्मसुधार ने एक और विषय में भी मतभेद को प्रकट किया, अर्थात, यीशु ख्रीष्ट की अपनी कलीसिया पर और वास्तव में, सब वस्तुओं पर सर्वोच्च और एकमात्र सर्वप्रधानता।

एक साथ लिए जाने पर, आरम्भिक कलीसिया के वैश्विक विश्वास वचन और धर्मसुधार की ये प्रमुख बातें बाइबल आधारित विश्वासयोग्य सुसमाचार का प्रचार करने हेतु कलीसिया के लिए दिशा-निर्देशन तैयार करते हैं। विश्वास वचन और धर्मसुधार के विभिन्न अंगीकार और धर्मप्रश्नोत्तरी विश्वास के सारांशों को उपलब्ध कराते हैं

तथा विश्वास के लिए और सुसमाचार के लिए स्पष्टता को लाते हैं।

वचन देहधारी हुआ: ख्रीष्टविज्ञान पर लिग्निएर का कथन इस पीढ़ी की कलीसिया को नम्रता से ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य के विषय में एक संक्षिप्त कथन देने का प्रयास करता है—और, परमेश्वर की आशीष के साथ, आने वाली पीढ़ियों के लिए—जो कि वैश्विक कलीसियाई विश्वास वचनों और धर्मसुधार के ईश्वरविज्ञान दोनों के अतीत वाले धन पर आधारित है। शायद यह कथन और इसके साथ संलग्न स्वीकृति और अस्वीकृति के छब्बीस अनुच्छेद, आगे की चर्चा और विचार के लिए ख्रीष्टविज्ञान की इन महत्वपूर्ण बातों पर एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करें। शायद स्वयं यह कथन भी कलीसिया के लिए उपयोगी साबित हो सकता है। इस कथन को सार्वजनिक रीति से दोहराए जाने हेतु उपयुक्त बनाने के लिए हर प्रयास किया गया है। हमारी अभिलाषा यह है कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस कथन के संपर्क में आए वह यह जाने कि "यीशु ख्रीष्ट प्रभु है।"

क थ न

इस कथन में छः छंद या भाग हैं। पहला, दो मुख्य क्रियाओं के साथ, प्राक्कथन के रूप में कार्य करता है: अंगीकार करना और आनन्दित होना । परमेश्वर ने अपने आप को और अपनी इच्छा दोनो को, पवित्रशास्त्र के पृष्ठों में प्रकट किया है। फिर भी, अभी भी कुछ "गुप्त बातें" हैं जो सिर्फ उसके वश में हैं (व्यवस्थाविवरण 29:29)। हमें ईश्वरविज्ञान के कार्य में अपनी सीमाओं को सर्वदा ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए हम सुसमाचार के रहस्य और चमत्कार को अंगीकार करते हुए आरम्भ करते हैं। इस कथन का प्राथमिक केंद्रबिंदु देहधारण है, जिसे हम संक्षिप्त रीति से इन शब्दों से परिभाषित करते हैं कि परमेश्वर देहधारी हुआ। यह व्यक्ति ख्रीष्ट, तुरन्त ख्रीष्ट के कार्य की ओर ले चलता है, इसलिए हम सामूहिक रूप से ख्रीष्ट के उद्धार के कार्य में आनन्द मनाते हैं।

दूसरा छंद ख्रीष्ट को त्रिएक परमेश्वर के व्यक्तियों के साथ समान रूप से आसीन देखते हुए, उसके वास्तविक परमेश्वरत्व पर बल देता है। कैल्सिडॉन की परिभाषा में कैल्सिडॉन सूत्र के पुनःकथन के साथ इस छंद का अन्त होता है। देहधारण के समय से, ख्रीष्ट एक व्यक्ति में दो स्वभावों के साथ रहा है और सदा रहेगा।

ख्रीष्ट के वास्तविक मनुष्यत्व पर बल देते हुए, देहधारण की व्याख्या तीसरे छंद में पाई जाती है। वह जन्मा था। वह इम्मानुएल है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ" (मत्ती 1:23)। यहाँ पर हम उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और द्वितीय आगमन को अंगीकार करते हैं। ये देहधारण के ऐतिहासिक तथ्य हैं।

धर्मसुधार के समय पुनः-प्राप्त हुईं अन्तरदृष्टियों पर आधारित देहधारण के ईश्वरविज्ञान वाले तथ्य चौथे भाग में आते हैं। हमारे लिए, यीशु सिद्ध रीति से आज्ञाकारी था। उसने व्यवस्था का पालन किया (सक्रिय आज्ञाकारिता) और व्यवस्था के दण्ड का मूल्य चुकाया (निष्क्रिय आज्ञाकारिता)। वह निष्कलंक मेमना था, जिसने हमारे लिए प्रतिस्थापनीय प्रायश्चित्त किया। उसने सम्पूर्ण मानवता का सामना करने वाली सबसे जटिल समस्या का समाधान किया: पवित्र परमेश्वर का प्रकोप। इस छंद का अन्त होता है अभ्यारोपण के सिद्धान्त की घोषणा के साथ। हमारे पाप ख्रीष्ट पर, अभ्यारोपित किए गए, या गिने गए, जबकि उसकी धार्मिकता हम पर अभ्यारोपित की गई। हमारे और परमेश्वर के मध्य केवल और पूर्ण रीति से उसके कारण जो ख्रीष्ट ने हमारे लिए किया शान्ति

है। हमें उसकी धार्मिकता पहनाई गई है।

ख्रीष्ट का त्रिविध कार्यभार (मुनुस ट्रिप्लेक्स) एक उपयोगी ईश्वरविज्ञान की रचना है जो संक्षिप्त रीति से ख्रीष्ट के कार्य को व्यक्त करता है। नबी, याजक, और राजा के तीन कार्यभार पुराने नियम में मध्यस्थता की अलग-अलग भूमिकाएँ थीं। यीशु अपने एकल व्यक्ति में तीनों को एक साथ सम्मिलित करता है, और वह तीनों को सिद्ध रीति से कार्यन्वित करता है। यहाँ पर हम न केवल अतीत में क्रूस पर ख्रीष्ट के मध्यस्थता के कार्य पर, परन्तु पिता के दाहिने हाथ पर हमारे लिए मध्यस्थ के रूप में उसके वर्तमान के कार्य पर भी चिन्तन करते हैं।

अन्तिम छंद एकमात्र, संक्षिप्त अंगीकार की पुष्टि करता है: यीशु ख्रीष्ट प्रभु है । समस्त सच्चा ईश्वरविज्ञान स्तुतिगान, या आराधना की ओर अगुवाई करता है। परिणामस्वरूप, मुख्य क्रिया स्तुति करना के साथ कथन का अन्त होता है। अभी ख्रीष्ट की आराधना करने के द्वारा, हम अपने अनन्तकाल के कार्य के लिए तैयारी कर रहे हैं।

स्वीकृति एवं अस्वीकृति के छब्बीस अनुच्छेद

इस कथन के वाक्यांश ख्रीष्टविज्ञान के अध्ययन के लिए प्रवेश द्वार हैं, जो ख्रीष्ट का व्यक्ति और कार्य के विषय में बाइबल की शिक्षा के धन की खोज करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। हमें अतिरिक्त मार्गदर्शन देने के लिए, स्वीकार और अस्वीकार के छब्बीस अनुच्छेद जोड़े गए हैं, प्रत्येक के साथ पवित्रशास्त्र में से प्रमाण संलग्न है। प्रत्येक के लिए समर्थन देने वाले अन्य पदों के साथ एक मुख्य पद को पूर्णतयाः लिखा गया है। ये अनुच्छेद महत्वपूर्ण हैं। वे ख्रीष्ट का व्यक्ति और कार्य के विषय में बाइबल की शिक्षा के लिए सीमाओं को निर्धारित करते हैं।

अनुच्छेद 1 देहधारण की पुष्टि करते हुए, प्राक्कथन का कार्य करता है।

अनुच्छेद 2 ख्रीष्ट के सच्चे परमेश्वरत्व का दावा करता है, जबकि अनुच्छेद 3-5 बाइबल के एक-व्यक्ति, दो-स्वभाव ख्रीष्टविज्ञान को प्रस्तुत करते हैं। अनुच्छेद 6-9 ख्रीष्ट के सच्चे मनुष्यत्व को प्रकट करते हैं। अनुच्छेद 10-26 ख्रीष्ट के व्यक्ति से फिरकर ख्रीष्ट के कार्य की ओर जाते हैं। इनका प्रारम्भ उद्धार के सिद्धान्तों की पुष्टि करते हुए होता है तथा ख्रीष्ट के त्रिविध कार्यभार के वर्णन के साथ अन्त होता है।

अस्वीकृतियों का अत्यधिक महत्व है। हमारे सहनशीलता के युग में किसी विश्वास को अस्वीकार करने का साहस करना अत्यन्त अप्रचलित है, परन्तु ये स्वीकृति और अस्वीकृति के अनुच्छेद घमण्डपूर्ण दुस्साहस का कार्य नहीं है। इसके विपरीत, वे इस आशा के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं कि बाइबल की शिक्षा के सुरक्षित तथा सम्पन्न सीमाओं के भीतर रहने में कलीसिया की सहायता हो। दूसरा यूहन्ना 9 घोषित करता है, “जो कोई बहुत दूर भटक जाता है और ख्रीष्ट की शिक्षा में बना नहीं रहता है, उसके पास परमेश्वर नहीं है।” यह ख्रीष्ट की बाइबल वाली शिक्षा से आगे चले जाने की, या परमेश्वर के वचन में प्रकट की गई ख्रीष्टविज्ञान की उन निर्धारित सीमाओं से परे निकल जाने की बात करता है। जैसे-जैसे छब्बीस अनुच्छेद कथन के विभिन्न छंदों को समझाते हैं, तो ये

अनुच्छेद स्वयं भी ख्रीष्ट के विषय में बाइबल की गहरी शिक्षा की ओर ले जा सकते हैं।

कुछ लोग उचित रीति से पूछ सकते हैं कि एक नए कथन की आवश्यकता ही क्यों है? यह एक अच्छा प्रश्न है। उसके लिए, हम इस कथन के लिए तीन कारणों को प्रस्तुत करते हैं। हम भरोसा करते हैं कि यह प्राचीनकाल और वर्तमान दोनों चुनौतियों को सम्बोधित करने के द्वारा आज कलीसिया की आराधना और शिक्षण की सेवा करेगा। हम यह भी भरोसा करते हैं कि यह उन लोगों को जो सुसमाचार की सेवा में हैं अन्य लोगों को पहचानने में एक साधन प्रदान करेगा जो सच में सेवा में सहकर्मी हैं। अन्ततः, हमें अनुभूति होती है कि कलीसिया के लिए चुनौतीपूर्ण समय क्षितिज पर हैं, और हम भरोसा करते हैं कि यह कथन हम सब को सुसमाचार के सार का—उसकी सुन्दरता, उसकी आवश्यकता, और उसकी तात्कालिकता का स्मरण दिलाएगा। इन प्रत्येक कारणों पर ध्यान दीजिए:

आराधना और आत्मिक निर्माण हेतु

लिग्निएर नम्रतापूर्वक इस कथन को कलीसिया के लिए प्रस्तुत करता है। आरम्भिक शताब्दियों से, मसीही लोगों ने कलीसिया की आराधना में विश्वास वचनों का उपयोग किया है। यह आशा की जाती है कि यह कथन उसी उद्देश्य को पूरा करेगा। बाइबल की शिक्षा के विस्तृत क्षेत्रों की खोज करने के लिए विश्वास वचन सहायक शैक्षिक उपकरण हो सकते हैं। यह भी आशा की जाती है कि यह कथन तथा छब्बीस अनुच्छेद एक मार्गदर्शक के रूप में कलीसिया में और अधिक बाइबल की खोज और मनन के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य का सिद्धान्त कलीसिया की पहचान और स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं। कलीसिया की प्रत्येक पीढ़ी को ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य के शास्त्रसम्मत समझ का अध्ययन करने और पुष्टि करने की आवश्यकता है। हम भरोसा करते हैं कि यह कथन सहायक हो सकता है।

सुसमाचार में सर्वनिष्ठ कारण के लिए

विश्व में गैर-मतसम्बद्ध कलीसियाओं, संस्थाओं, और आन्दोलनों की एक बढ़ती संख्या है —अधिकांश सुसमाचार की वृद्धि हेतु सेवा कर रहे हैं। कभी-कभी यह परखना कठिन होता है कि कहाँ स्वस्थ साझेदारी और सम्बन्ध हो सकते हैं। सम्भवतः यह कथन ख्रीष्ट में सह भाइयों और बहनों को पहचानने के लिए और सुसमाचार के लिए साझा प्रयासों को सदृढ़ करने के लिए कार्य कर सकता है।

आज के जैसे समय के लिए

ऑक्सफ़ोर्ड के विश्वविद्यालय नगर में शहीदों का स्मारक खड़ा है, जो ब्रिटेन के कई धर्मसुधारकों जैसे कि थॉमस क्रैनमर, निकलस रिडली, और ह्यू लैटिमर के द्वारा किए गये बलिदान को स्मरण कर रहा है। यह उनके बारे में वर्णन करता है कि उन्होंने उन पवित्र सत्यों की साक्षी देते हुए अपनी देह को जला दिए जाने के लिए दे दिया, जिनकी उन्होंने पुष्टि की और रोम की कलीसिया की त्रुटियों के विरुद्ध डटे रहे, और आनन्द मनाते हुए कि उन पर यह अनुग्रह हुआ कि ख्रीष्ट पर केवल विश्वास ही न करें वरन् उसके लिए कष्ट भी सहें।

उन्होंने यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार के पवित्र सत्यों पर विश्वास किया, उसकी पुष्टि की, और बनाए रखा। इन सत्यों की साक्षी देते हुए, उन्होंने उद्घोषणा की, बचाव किया, और उनके लिए दुःख भी सहा। शताब्दियों से अनेक लोग इन धर्मसुधारकों के साथ सम्मलित हुए हैं। आधुनिक पश्चिमी जगत में अधिकांश कलीसिया ने धार्मिक स्वतंत्रता का आनन्द लिया है। यह कब तक बना रहता है अनिश्चित है। यह पीढ़ी या आने वाली पीढ़ी सम्भवतः ख्रीष्ट पर विश्वास करने हेतु दुख उठाने के लिए बुलाई जाए। तैयार न रहना अज्ञानता की बात होगी, और अगली पीढ़ी को बिना तैयारी के छोड़ देना भी अज्ञानता होगी।

वास्तव में, ख्रीष्ट के व्यक्ति और कार्य के विषय में ये सत्य विश्वास करने, पुष्टि करने, बनाए रखने, और दुख उठाने के योग्य हैं। ख्रीष्ट में जीवन है।

पृथ्वी पर ख्रीष्ट के जीवन में एक ऐसा समय आया जब सारी भीड़ ने उसे त्याग दिया, और वह अपने शिष्यों के समूह के साथ रह गया था। उसने उनसे पूछा कि क्या वे भी छोड़कर जाने वाले थे। पतरस ने समूह के लिए बोला: “प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे पास हैं। हमने विश्वास किया है, और जान लिया है कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है” (यूहन्ना 6:68-69)। कुछ समय पश्चात, बारह में से एक को संदेह हुआ। यीशु क्रूस पर मारा गया था और गाड़ा गया था। उसके पुनरुत्थान के विषय में साक्षी थी, परन्तु थोमा ने संदेह किया। फिर यीशु थोमा पर प्रकट हुआ। उसने ख्रीष्ट के घावों को स्पर्श किया, वे घाव जिन्हें उसने हमारे पापों के लिए सहे थे। थोमा ने अंगीकार किया, “हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!” (यूहन्ना 20:28)।

ऐसा ही हम विश्वास करते हैं। ऐसा ही हम अंगीकार करते हैं।